प्रातः क्लास 24/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम डबल शान्ति। बच्चे जब यहाँ बैठते हैं तो यह जानते हो बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है और सद्गुरु भी है। तीन की दरकार रहती है। बाप, टीचर और पिछाड़ी में गुरु। यहाँ याद भी ऐसे करना है; क्योंकि नई बात है ना। बेहद का बाबा भी है। बेहद का माना सभी का। यहाँ जो भी आवेंगे कहेंगे बाबा। यह स्मृति में लाओ। इसमें किसको संशय हो तो हाथ उठाओ। यह वन्डरफुल बात है ना। जन्म–जन्मान्तर कब ऐसा नहीं मिला होगा जिसको तुम बाप, टीचर, गुरु समझो सो भी सुप्रीम। बेहद का बाप, बेहद का टीचर, बेहद का सद्गुरु। ऐसा कब मिला! सिवाय इस पुरुषोत्तम संगमयुग के कब मिल न सके। इसमें किसको संशय हो तो हाथ उठावे। यहाँ सभी निश्चय बुद्धि हो बैठे हैं। यहाँ जब बैठते हो तो किसको याद करते हो। जानते हो शिवबाबा है। वही पढ़ाते भी हैं, फिर गुरु भी बनते हैं। मुख्य है ही तीन। बेहद का बाप बेहद का बाप नालेज भी देते हैं। बेहद की नालेज यह एक ही है। हद की नॉलेज तो तुम अनेक पढ़ते आये हो। कोई वकील बनते हैं कोई सर्जन बनते हैं। क्योंकि यहाँ तो डॉक्टर, वकील आदि सभी चाहिए ना। वहाँ तो इन सभी की कुछ भी दरकार नहीं। वहाँ दुख की कोई बात ही नहीं होती। तो अभी बाप बैठ बेहद की शिक्षा बच्चों को देते हैं। फिर आधा कल्प कोई शिक्षा पढ़ने की तुमको कोई दरकार ही नहीं। एक ही बार शिक्षा मिलती है जो 21 जन्मों के लिए फलीभूत होती है। अर्थात् उनका फल मिलता है। वहाँ तो डॉक्टर, जज, बैरीस्टर आदि होते ही नहीं। यह तो निश्चय है ना बरोबर ऐसे हैं। वहाँ कोई दुख होता ही नहीं। कर्म–भोग होता ही नहीं। बाप कर्मों की गति बैठ समझाते हैं। वह गीता सुनाने वाले क्या ऐसी बातें सुनाते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को यह सहज रा(ज)योग सिखाता हूँ। उसमें तो लिख दिया है कृष्णभगवानुवाच; परन्तु वह है दैवीगुणों वाला मनुष्यवाच। शिवबाबा तो कोई नाम धराते नहीं। उनका दूसरा कोई नाम नहीं। बाप कहते हैं मैं इस शरीर का लोन लेता हूँ। यह शरीर रूपी मकान हमारा नहीं है। यह भी मकान है ना, खिड़कियाँ आदि सभी हैं। तो बाप समझाते हैं मैं हूँ तुम्हारा बेहद का बाप। अर्थात् सभी आत्माओं का बाप हूँ। पढ़ाता भी हूँ आत्माओं को। उनको कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर। अर्थात् रूहानी बाप। और कोई किसको भी रूहानी बाबा नहीं कहेंगे। यहाँ तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप है स्प्रीचुअल फादर। कलकत्ते से समाचार आया था वर्ल्ड स्प्रीचुअल कानफ्रेन्स हो रही है। वास्तव में स्प्रीचुअल कॉनफ्रेन्स तो है नहीं। वह सभी है नॉन स्प्रीचुअल। देह–अभिमानी हैं। बाप कहते हैं बच्चे देहीअभिमानी भव। देह का अभिमान छोड़ो। वह थोड़े ही ऐसे किसको कहेंगे। स्प्रीचुअल अक्षर भी अभी डालते हैं। आगे सिर्फ रीलिजन कॉनफ्रेन्स कहते थे। स्प्रीचुअल का कोई अर्थ नहीं समझते हैं। स्प्रीचुअल फादर अर्थात् निराकारी फादर। तुम आत्माएँ हो स्प्रीचुअल बच्चे। स्प्रीचुअल फादर आकर तुमको पढ़ाते हैं। यह समझ और कोई में हो न सके। बाप जो बैठ बतलाते हैं कि मैं कौन हूँ। गीता में यह नहीं है। बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं मैं तुमको बेहद की शिक्षा देता हूँ। इसमें वकील, सर्जन, जज आदि कोई की दरकार नहीं; क्योंकि वहाँ तो एकदम सुख ही सुख है। दुख का नाम–निशान नहीं। यहाँ फिर सुख का नाम निशान न है। इसको कहा जाता है प्राय। सुख तो जैसे काग विष्टा समान है। जरा सा सुख है। तो वह बेहद सुख की नालेज दे कैसे सकते। इसलिए गायन भी है गुरु जिसकी अन्धले चेला सत्यानाश। यह हाल हो गया है सभी का। आधा कल्प से भक्ति करते आये हैं। सत्यानाश होते गये हैं। पहले जब देवी देवताओं का राज्य था तो सत्या 100% अच्छी थी। तो यह है बेहद की नालेज। तुम जानते हो यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। जिसका बीजरूप ऊपर में है। उनमें सारी नालेज है झाड़ की। मनुष्यों को यह नालेज नहीं है। आम का बीज है उनको थोड़े ही नालेज है। वह तो जड़ है। तुम्हारे में सारी नालेज है उन बीजों की भी। बाप भी कहते हैं मेरे में नालेज है। मैं चैतन्य बीजरूप हूँ। मुझे कहते ही हैं ज्ञान का सागर। ज्ञान से गति सद्गति होती है। मैं हूँ सभी का बाप। मुझे पहचानने से तुम बच्चों को वरसा मिल जाता है; परन्तु फिर राजधानी है ना। स्वर्ग में भी मर्तबे तो नम्बरवार ही होते हैं। बाप एक ही पढ़ाई पढ़ाते हैं। पढ़ने वाले तो नम्बरवार हैं। इसमें फिर और कोई पढ़ाई की दरकार नहीं। वहाँ कोई बीमार नहीं होता। पाई पैसे की कमाई के लिए पढ़ाई नहीं पढ़ते। तुम यहाँ से

बेहद का वरसा ले जाते हो। वहाँ यह मालूम नहीं पड़ेगा कि यह हमको कोई ने दिलाया है। यह तुम बच्चे समझते हो। हद की नालेज तो तुम पढ़ते आये हो। अभी बेहद की नालेज पढ़ाने वाले को देख लिया, जान लिया। जानते हो बाप बाप भी है, टीचर भी है, आकर हमको पढ़ाते हैं। सुप्रीम टीचर है राजयोग सिखलाते हैं। सच्चा–2 सद्गुरु भी है। यह है बेहद का राजयोग। बैरीस्टरी आदि पढ़ने लिए भी टीचर से योग रखा जाता है; परन्तु वह बैरीस्टरी डॉक्टरी ही सिखावेंगे; क्योंकि यह दुनिया ही दुख की है ना। वह सभी हैं हद की पढ़ाइयाँ। यह है बेहद की पढ़ाई। बाप सभी को बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। यह भी जानते हो यह बाप, टीचर, सदगुरु कल्प2 आते हैं। फिर यही पढ़ाई पढ़ाते हैं। सतयुग–त्रेता के लिए। फिर यह प्रायःलोप हो जाता है। सुख की प्रारब्ध पूरी हो जाती है ड्रामा अनुसार। यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। उनको ही पतित–पावन कहा जाता है। रावण को त्वमेव माताश्चपिता....वा पतित पावन कहेंगे क्या? इनके मर्तबे और उनकी मर्तबे में रात–दिन का फर्क है। अभी बाप कहते हैं मुझे पहचानने से तुम सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पा सकते हो। अब कृष्ण भगवन होता तो उनको तो कोई भी झट पहचान लेते। कृष्ण का जन्म कोई दिव्य अलौकिक नहीं गाया हुआ है। सिर्फ पवित्रता से होता है। बाप तो कोई के भी गर्भजेल से नहीं निकलता है। समझाते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों। रूह ही पढ़ता करता है ना। सभी संस्कार अच्छे वा बुरे रूह में ही रहते हैं। जैसी2 कर्म करती है उस अनुसार ही उसको शरीर मिलता है। कोई बहुत दुख भोगते हैं कोई काना, कोई बहरा होता है। कहेंगे पास्ट में ऐसे कर्म किये हैं। जिसका फल यह है। आत्मा के कर्मों अनुसार ही रोगी आदि शरीर मिलता है। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको पढ़ाने वाला है गॉड फादर। गॉड टीचर। गॉड प्रीसेप्टर। उसको कहते ही हैं गॉड परमआत्मा। उसको मिलाकर परमात्मा कहते हैं। सुप्रीम सोल। इनको तो सुप्रीम नहीं कहेंगे। सुप्रीम अर्थात् ऊँच ते ऊँच। पवित्र ते पवित्र। मर्तबे तो हरेक के अलग2 होते हैं। कृष्ण का जो मर्तबा है वह दूसरे को मिल नहीं सकता। प्राइम मिनिस्टर का मर्तबा दूसरे को थोड़े ही देंगे। बाप का भी मर्तबा अलग है। ब्र0वि0शं0 का अलग है। ब्रह्मा देवता, विष्णु देवता, शंकर देवता कहते हैं। अभी शंकर देवता, शिव तो परमात्मा है ना। दोनों को मिलाकर शिव–शंकर कैसे कहेंगे। दोनों अलग2 है ना। न समझने कारण शिव शंकर एक ही कह देते हैं। नाम भी ऐसे ही रख देते हैं। राम अलग कृष्ण नाम भी रखते। फिर राम कृष्ण एक का भी नाम रख देते हैं। इतना ऊँच नाम नीच पर थोड़े ही रखना चाहिए। कहाँ वह राधे कृष्ण 100% पावन, कहाँ यह पतित। तो इसको कहेंगे ईलेट्रेट। बाप ने ऐसा कोई नाम नहीं रखा। बाप ने तो बड़ी ही रमणिक नाम रखे। कहाँ वह ल0ना0 विश्व के मालिक, कहाँ यह छी–छी उल्टी लटके हुए उल्लू मिसल मनुष्य। तो यह सभी बातें बाप ही समझाते हैं। कल्प2 बाप ही आकर समझाते हैं। तुम जानते हो यह बाबा भी है, टीचर भी है, तो सद्गुरु भी है। हरेक मनुष्य को बाप भी होता है, गुरु भी होता है। जब बूढ़े होते हैं तब गुरु करते हैं। आजकल छोटेपन में ही गुरु कराये देते हैं। समझते हैं गुरु अगर न किया तो अवगत हो जावेगा। आगे 60 वर्ष के बाद गुरु करते थे। वह होती है वानप्रस्थी अवस्था। निर्वाण। अर्थात् वाणी से परे धाम है स्वीटसायलेन्स होम। जिसमें जाने लिए आधा कल्प तुमने मेहनत की है; परन्तु पता नहीं है तो कोई जा कैसे सकते। किसको रास्ता बता कैसे सकते। एक के सिवाय तो कोई रास्ता बता न सके। सभी की बुद्धि एक जैसी नहीं होती है। कोई तो जैसे कथा बैठ सुनते हैं। फायदा कुछ नहीं। उन्नति कुछ नहीं। तुमने जन्म–जन्मान्तर कितनी कथाएँ सुनी हैं। ढेर शास्त्र हैं। बाप कोई शास्त्र लेते हैं क्या। कुछ भी नहीं। दरकार ही नहीं। त्रिमूर्ति भी सूक्ष्मवतन में होता है। यह सिर्फ समझाने लिए दिखाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो हड्डियाँ मांस दिखाना न चाहिए। उन्हों को फरिश्ते कहते हैं। यह भी गायन है। मिरवा मौत मलूका शिकार.....। तुम अभी बगीचे के फूल बनते हो। फूल से काँटा बने फिर बाप काँटा से फूल बनाते हैं। तुम ही पूज्य थे फिर पुजारी बने। 84 जन्म लेते–2 सतोप्रधान से तमोप्रधान पतित बन गये हो। बाप ने सीढ़ी सारी समझाई है। अभी फिर हम पतित से पावन कैसे बनें यह किसको भी पता नहीं है। गाते भी हैं हे पतित पावन आओ आकर पावन ..... पानी की नदियाँ

सागर आदि को पतित–पावन समझ क्यों जाकर स्नान करते हैं। स्नान करने की भी बहुत जगह होते हैं। बड़ा सम्भाल से सागर में जाना होता है। सागर की लहरें इतनी जोर से आती हैं जो मनुष्य को फट से ले जाते हैं। बड़ा खबरदारी से जाते हैं। कोई2 तो डूब जाते हैं। कलकत्ते में नदी और सागर इकट्ठा होता है वहाँ जाकर स्नान करते हैं। जिसको संगम कहा जाता है। यह लोग पतित–पावन गंगा को कहते हैं; परन्तु नदी भी कहाँ से निकली। सागर से ही निकलती है ना। यह सभी सागर के ही सन्तान हैं। तो हर एक बात अच्छी रीति समझने की है। यहाँ तो तुम बच्चियाँ संगम में बैठी हो। बड़ा ही अच्छा लगता है। बाहर कुसंग में जाने से ही तुमको बहुत निपटियाँ सुनावेगी। फिर इतने सभी बातें भूल जावेंगे। कुसंग में जाने से ही घुटका खाने लग पड़ते हैं। ताकत का तब मालूम पड़ता है; परन्तु यह बातें तो भूलनी न चाहिए ना। बाबा हमारा बेहद का बाबा भी है टीचर भी है पार भी ले जाते हैं। इस निश्चय से ही तुम आये हो। वह सभी है जिस्मानी लौकिक पढ़ाई। लौकिक भाषाएँ। यह है अलौकिक। बाप कहते हैं मेरा जन्म भी अलौकिक है। मैं लोन लेता हूँ। पुरानी जूती लेता हूँ। सो भी पुराने ते पुराना। सबसे पुरानी जूती है। बाप ने जूता लिया है जिसको लाँगबूट कहते हैं। यह कितनी सहज बातें हैं यह तो भूलनी नहीं हैं; परन्तु माया भुला देती है। बाप बाप भी है, बेहद की शिक्षा भी देने वाला है। और कोई दे न सके। बाबा कहते हैं भल जाकर देखो कहाँ से मिलती है। सभी हैं मनुष्य। वह तो यह नालेज दे न सके। भगवान एक ही रथ लेते हैं जिसको भाग्यशाली रथ कहते हैं। जिसमें बाप ही प्रवेशता होती है पद्मापदमभाग्यशाली बनाने। यह बिल्कुल ही नजदीक का दाना है। ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं। शिवबाबा इनको यह सुनाते हैं। तुमको भी इन द्वारा शिवबाबा सुनाते हैं। बैज में क्लीयर है शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा यह बनाते हैं। ब्र0सा0 सो फिर ल0ना0 बनते हैं। विष्णु की पुरी स्थापन होती है। इसको कहा जाता है राजयोग राजाई स्थापन करने का। अभी यहाँ सुन तो रहे हैं; परन्तु बाबा जानते हैं बहुतों के कान से बह जाता है। कोई धारण कर सुना सकते हैं। उनको कहा जाता है महारथी। सुनकर और धारण करते हैं औरों को रुचि से समझाते हैं। महारथी समझाने वाला होगा तो झट समझेंगे। घोड़ेसवार से कम। प्यादे से और भी कम। यह तो बाप जानते हैं कौन–2 महारथी हैं। कौन घोड़ेसवार हैं। अभी इसमें मुँझने की तो बात ही नहीं। फिर भी झुटके खाते रहते हैं। आँखें बन्दकर बैठते हैं। कमाई में कब झुटका आता है क्या! उबासी से बाबा समझ जाते हैं यह थका हुआ है। कमाई में कब थकावट नहीं होती है। उबासी है उदासी की निशानी। फिर धारणा हो न सके। कोई न कोई बात की अन्दर घुटके खाते रहने वाले को उबासी बहुत आती है। अभी तुम बाप के घर बैठे हो। इनको कहा जाता है ईश्वरीय परिवार। सिर्फ ईश्वरीय परिवार भी नहीं; परन्तु वह टीचर भी है, सतगुरु भी है। परिवार भी ऐसे हैं। बच्चे भी हैं, टीचर भी बनते हैं, फिर गुरु भी बनते हैं रास्ता बताने लिए। मास्टर गुरु कहा जाता है ना। तो बाबा का राइट हैंड बनना चाहिए। जो बहुतों का कल्याण कर सकें। धंधे सभी में है नुकसान बिगर धंधे नर से नरा0 बनने का। सभी की कमाई खत्म हो जानी है। नर से ना0 बनने का धंधा बाप ही सिखलाते हैं। तो फिर कौन सी पढ़ाई पढ़नी चाहिए? जिनके पास धन बहुत है वह समझते हैं स्वर्ग तो यहाँ ही है। बापू गांधी ने रामराज्य स्थापन किया। अरे दुनिया तो यह तमोप्रधान पुरानी है ना। और ही दुख बढ़ता जाता है। इनको रामराज्य कैसे कहेंगे; परन्तु बात मत पूछो। भगवान को तो ठिक्कर भित्तर में ठोक देते हैं। गांधी के लिए कब कहेंगे ठिक्कर भित्तर में है वा कच्छ मच्छ अवतार उनके लिए कहेंगे? कितने बेसमझ बन पड़े हैं। बेसमझ को तमोप्रधान कहा जाता है। समझदार होते हैं सतोप्रधान। यह चक्र फिरता रहता है। इसमें कुछ भी बाप से पूछने का नहीं रहता। बाप का फर्ज है रचयिता और रचना का ज्ञान देना। वह तो देते रहते हैं। मुरली में सभी समझाते रहते हैं। सभी बातों का रेसपॉन्ड मिल जाता है। बाकी पूछेंगे क्या। बाप के सिवाय कोई समझा नहीं सकते तो पूछ भी कैसे सकते। सतयुग में मेडीकल ऑफीसर्स की दरकार ही नहीं। वहाँ तो एवर हेल्दी, एवर वेल्दी, ऐवर हैपी रहते हैं। यह भी तुम बोर्ड पर लिख सकते हो। एवर हेल्दी वेल्दी हैपी 21 जन्मों के लिए बनना है तो आकर समझो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।